04 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सतगुरु का प्रथम वरदान - 'मन्मनाभव' के महामंत्र से महादानी वरदानी होने का अनुभव

➢➢ मै ज्ञान रत्न चुगने वाली होलीहंस आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा ज्ञानरत्न चुगते चुगते

→ खुशी की डांस कर रही हूँ

◆ यह अलौकिक खुशी की रूहानी डांस

◆ मुझ आत्मा को बहुत प्यारी हैं

• सारे कल्प से न्यारी हैं

➳_ ➳ मै आत्मा मास्टर ज्ञान सागर हूँ

→ सागर की भिन्न भिन्न लहरे को देख

→ मै होलीहंस हर्षित हो रही हूँ

→ मन के खुशी के गीत गा रही हूँ

→ मन से ही सुन रही हूँ

→ जैसे ही मन्मनाभव हुई

→ गीत गाना व सुनना

→ शुरू हो जाता हैं

◆ तो लहरे रुपी साज़ बज रहे हैं

• डांस भी हो रहा हैं

➳_ ➳ मै आत्मा मन्मनाभव स्वरूप में स्थित हूँ

→ महामंत्र की वरदानी आत्मा हूँ

→ पहले वरदान की

→ मन्मना भव की

◆ अधिकारी आत्मा हूँ

→ सतगुरु की बच्ची

◆ मास्टर सतगुरु हूँ

→ गुरु पौत्र हूँ

→ मुझ आत्मा के सर्व सम्बंध

◆ बाप से अनुभव कर रही हूँ

→ सर्व सम्बंध की अधिकारी हूँ

◆ महामंत्रधारी हूँ

◆ महादानी हूँ

• सद्गुरु के वरदानों

• से पल रही हूँ

➢➢ मै भोलेनाथ बाप की संतान हूँ

➳_ ➳ सर्व प्राप्ति लेने में नम्बर वन सौदागर हूँ

➳_ ➳ पद्मापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ

→ स्वयं भगवान ने सौदे में

◆ मुक्ति - जीवनमुक्ति दी हैं

➳_ ➳ मै आत्मा सौदागर के साथ

➳_ ➳ जादूगर भी हूँ.

→ मुझ आत्मा ने भगवान से

◆ बड़ा सौदा किया है

• जो इस संगम पर ही होता हैं

→ स्वयं दाता को अपना

• बना लिया हैं

◆ मै कोटो में कोई

• कोई में कोई आत्मा हूँ

➳_➳ मै बाबा की सिकिलधी बच्ची हूँ।

→ मुझ आत्मा को खुशी हैं

→ नाश हैं बाप से मिलने की

→ साथ साथ स्मृति हैं

→ की मुझ श्रेष्ठ आत्मा का

→ ऊंच ते ऊंच बाप के साथ

→ विशेष पार्ट हैं

→ मुझ आत्माकी जैसी स्मृति वैसी स्थिति

→ स्वतः प्रैक्टिकल स्वरूप में बन रही हैं

◆ मै आत्मा हर एक एक

◆ गुण का अनुभव कर रही हूँ

◆ नॉलेजफूल हूँ

◆ जितनी अनुभवी मूर्त हूँ

◆ उतना मुझ आत्मा का

◆ फ़ाउंडेशन पक्का हैं

- माया मुझ आत्मा को हिला नहीं सकती
- हर समस्या, हर परिस्थिति
- मुझ आत्मा को खेल समान
- अनुभव होती हैं
- खुशी-खुशी से पार कर रही हूँ
- मै आत्मा सदा विजय की
- तिलक धारी हूँ
- मुझ आत्मा की सारी
- हलचल समाप्त हो रही हैं